आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 29/05/2023; Accepted: 14/06/2023; Published: 24/06/2023

हिंदी साहित्य और सामासिक संस्कृति

- श्वेता मिश्रा
शोधर्थिनी,
हिंदी विभाग, श्रीमती सी.एच.एम. कॉलेज,
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई
8879952471,
pandeysweta012@gmail.com

श्वेता मिश्रा, **हिंदी साहित्य और सामासिक संस्कृति**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023,(263-266)

शोधसार:

शब्द ब्रह्मा शब्द वाणी शब्द श्रीहरि रूप है|

शब्द सत्या शब्द शंभू शब्द शीतल धूप है|

शब्द संध्या शब्द वृंदा शब्द केवल भोर हो|

शब्द में हो अर्थ सच्चे द्वेष का नहीं शोर हो|

अर्थात शब्द से ही काव्य बनता है और काव्य से साहित्य।

क्योंकि वह सहित के साथ सह का भाव भी रखता है| साहित्य समाज का दर्पण है और समाज का निर्माण संस्कृति से होता है, वास्तव में साहित्य समाज और संस्कृति तीनों ही एक दूसरे के अनुपूरक कहे जा सकते हैं, क्योंकि किसी एक का भी अस्तित्व दूसरे के बिना संभव नहीं और जब संस्कृति के बारे में बात की जाती है तब एक गौरव का भाव हमारे मन में उदित होता है। इस गौरव के बोध में जातिय अस्मिता की भावना पृष्ठभूमि के रूप में सक्रिय होने के कारण एक तरह की विशुद्ध सार्थकता एवं संतोष की तीव्र अनुभूति हम करते हैं| चूँकि भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष पुरानी हैं और काल के प्रवाह में जब अनेक समृद्ध संस्कृतियाँ भी नष्ट हो चुकी थी, तब भारतीय संस्कृति टिकी हुई थी। वैसे भी संस्कृति से एक जीवंत और दीर्घ परंपरा का बोध जुड़ा हुआ है |

वस्तुतः अतीत के सांस्कृतिक स्वरूप को पर्याप्त गहराई से देखा और सोचा गया है- आवश्यकता है वर्तमान संदर्भ में सांस्कृतिक स्वरूप देखने की; यद्यपि सामान्यतः सांस्कृतिक विषयों पर चिंतन करने वाले विद्वान एकमत हैं कि भारतीय संस्कृति एक सामासिक संस्कृति है।

हिंदी की रीतिकाल में अधिकांश कवि राज्याश्रित थे, राजघरानों में आर्य संस्कृति चलती थी भूषण का ओजस्वी काव्य चंद्रबरदाई की याद दिलाने लगा। भारतेंदु के साथ हिंदी के जिस नवीन युग का प्रारंभ हुआ वह आर्य अस्मिता के वर्चस्व की पुनः प्रतिष्ठा करने लगा महर्षि दयानंद का योगदान इस संदर्भ में अविस्मरणीय है| आर्यावर्त ने जिन वैदिक-अवैदिक सभ्यताओं और संस्कृतियों का संपर्क संघर्ष समन्वय हुआ उसने लंबे अरसे तक भारतीय मानस के आचरण व्यवहार जीवन के आदर्शों और मूल्यों को प्रेरित तथा उसे दिशा और आकार दिया। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृत भाषा के माध्यम से रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास, भवभूति, भास के काव्य और नाटकों के माध्यम से बार-बार व्यक्त हुआ है।

सभ्यता और संस्कृत के संबंध में पाश्चात्य विद्वान "ग्रीन" कामत दर्शनीय है।

एक संस्कृत तभी सभ्यता बनती है जबकि उसके आसपास एक लिखित भाषा दर्शन विशेषण युक्त श्रम विभाजन एक जटिल विधि और राजनीतिक प्रणाली हो।

"जिसबर्ट" के अनुसार "सभ्यता बताती है कि हमारे पास क्या है? और संस्कृति यह बताती है कि हम क्या हैं?"

जब हम हिंदी साहित्य काव्य में सामासिक संस्कृति की बात करते हैं तब भारतीय ही नहीं ईरानी अरबी यूरोपीय आदि वे सभी सांस्कृतिक विशेषताएं आ जाती हैं , जिसके साथ हमारा संपर्क हुआ है|

साहित्य क्या है? इसका स्वरूप क्या है? यह समाज से किस प्रकार संबंधित है? और यह संस्कृति को किस प्रकार अपने अंदर समेटे हुए हैं, तथा किस प्रकार संस्कृति को प्रभावित करता है एवं किस प्रकार यह संस्कृति से प्रभावित होता है? यह सब महत्वपूर्ण बिंदु है|

किसी भी प्रकार के साहित्य की मूल चेतना या भावना, मुख्य आधार, मानव समाज की चहुमुखी उन्नति ही होती है| प्रत्येक प्रकार के साहित्य का यह उद्देश्य होता है कि मानव हर प्रकार के राग, द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, शोषण, कलुषित विचार आदि दुर्भावनाओं को त्याग कर, उस परमपिता परमेश्वर सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता को, उसकी शक्ति को जानने का प्रयास करता हुआ, "आत्मवत सर्वभूतेषु" अर्थात सभी को अपने समान समझने का प्रयास करें तथा "सर्वे भवंतू सुखिनह" का भाव लेकर परमार्थ "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" के सिद्धांत को अपने जीवन में उतार लें|

यह कटु सत्य है कि जितना साहित्य हमारे भारत में है, जितना विषय वैविध्य हमारे साहित्य में हैं, उतना किसी भी अन्य देश के साहित्य में हो ही नहीं सकता हमारा तो एक-एक ग्रंथ ही सर्वकालिक जिसके सिद्धांत आज से हजारों वर्ष पूर्व भी उतने ही प्रासंगिक थे, जितने आज हैं| सिर्फ एक ग्रंथ "श्रीमद्भागवत गीता" को ही लीजिए, जो विश्व प्रसिद्ध है| सिर्फ यदि इसी एक ग्रंथ को ही आत्मसात कर लिया जाए तो मानव मात्र का जीवन सुधर सकता है, तो फिर अन्य साहित्य की तो बात ही क्या है।

हमारा साहित्य में धार्मिकता, नैतिकता, सामाजिकता, नीति राजनीति, आर्थिकता आदि सभी गुणों को सिखाता है| हमारे साहित्य में ज्ञान है, वैराग्य है, नीति है, श्रृंगार है, भक्ति है, प्रेम है, वात्सल्य है, करुणा है, ओज है, वीरता है, प्रकृति प्रेम है और जीव प्रेम है|

हिंदी साहित्य के इतिहास को इन्हीं गुणों के आधार पर विभक्त किया गया है, जैसे-

वीरगाथा काल, भक्ति काल, रीतिकाल और आधुनिक काल|

जिस काल में जिस भाव, जिस प्रकार के साहित्य की प्रधानता रहती है उसे उसी के नाम से संबोधित किया गया है| यही साहित्य, स्वस्थ्य सभ्यता एवं संस्कृति का निर्माण करने में सहायक है, जो हमारी पहचान है, भारतीयता की पहचान है| हिंदी को अपनी उदार सामासिक शब्द का परिचय एक और दिशा में देना है हिंदी साहित्य केवल हिंदी भाषा भाषियों का साहित्य नहीं रहा हिंदी भाषी भारतीय एवं अभारती भी साहित्य की सेवा कर रहे हैं| साहित्य समाज का दर्पण है, यह हम सब जानते हैं | आत्मा और शरीर का जो संबंध है वही संबंध साहित्य और समाज का है| यह शाश्वत सत्य है कि साहित्य की अपेक्षा समाज पहले जन्म लेता है और समाज से ही साहित्यकार जन्म लेते हैं| साहित्यकार के व्यक्तित्व की पहचान अलग होती है| सच्चे साहित्यकार गंभीर, चिंतनशील, संवेदनशील, दूरदृष्टा, व्यापक दृष्टिकोण रखते हुए भावना और संवेदनाओं से परिपूर्ण होते हैं| क्योंकि अपनी लेखनी से वो जिस साहित्य का निर्माण करते हैं, सृजन करते हैं, वह भविष्य में समाज का, संस्कृत का निर्माण करता है|

इसलिए प्रत्येक साहित्यकार यह प्रयास करता है कि वह जिस विषय पर साहित्य का सृजन करें, उसकी गणेश समाज से, उसकी समस्याओं से गहराई से जुड़ी हुई हों| ज्वलंत मुद्दों पर भी अपनी बात कहने से पूर्व उक्त सामाजिक विषय से संबंधित पूर्ण जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य है, क्योंकि साहित्यकार की कलम से निकला एक-एक शब्द समाज में परिवर्तन लाने में सक्षम है|

महात्मा गांधी की प्रेरणा से वर्धा में जो हिंदी की राष्ट्रभाषा प्रचार संबंधित समिति संगठित हुई, उसने दक्षिण में विशेषतः और समग्र भारत वर्ष ही नहीं, भारत से बाहर के देशों में हिंदी ध्वज को फहरा दिया| तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन इसका जीता जागता उदाहरण है| जिन महानुभावों ने हिंदी प्रचार कार्य में अपना सहयोग प्रदान किया है, वे सभी हमारे लिए वंदनीय एवं अभिनंदनीय है| जयतु हिंदी, जयतु भारत।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः तो यही कहा जा सकता है कि वास्तव में हर देश का साहित्य उस देश की लौकिक सभ्यता एवं संस्कृति, मातृभाषा, लोक गीत, लोक भाषाओं तथा तत्कालीन परिस्थितियों को भी उजागर करता है| साहित्य एक राष्ट्र की धरोहर है, उसका अभिमान है, गौरव है, पहचान है |

प्रत्येक युग का साहित्य उस युग की पहचान, उस युग का वैशिष्टय बताता है| अब इससे अधिक और क्या कहा जाए कि प्राचीन वैदिक साहित्य भारत के उन्नत और गौरवशाली समाज का प्रमाण है| इस साहित्य में

"विश्वमानव" और "वसुधैव कुटुंबकम" की जो भावना है, वह विशुद्ध भारतीय संस्कृति की महानता, विशालता, निः स्वार्थपरता और लोक कल्याणकारी भावनाओं की परिचायक है।

****